

क्षतविक्षत वि. (तत्.) 1. घायल, लहलुहान, वह व्यक्ति जिसे बहुत चोट लगी हो, जिसकी देह घावों से भरी हो 2. वह वस्तु जो बहुत जगह कट-फट गई हो जैसे- सुनहरी बाग में पुलिस को एक लाश क्षत-विक्षत अवस्था में मिली।

क्षतवृत्ति स्त्री. (तत्.) जीविका का साधन न होना, रोजी का सहारा न रहना।

क्षतव्रण पुं. (तत्.) 1. चोट पक जाने से होने वाला फोड़ा, वैद्यक में छह प्रकार के फोड़ों में से एक 2. किसी स्थान के कटने या उस पर चोट लगने के बाद, उस स्थान को क्षतव्रण कहते हैं।

क्षतसर्पण पुं. (तत्.) गतिहीनता, गमन शक्ति का हास।

क्षता स्त्री. (तत्.) वह कन्या जिसका कौमार्य विवाह से पहले ही नष्ट हो चुका हो।

क्षतारि वि. (तत्.) विजयी, विजेता।

क्षताशौच [क्षत+अशौच] पुं. (तत्.) घायल होने का अशौच, वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल होने के कारण लगता है, इस अशौच में मनुष्य किसी प्रकार का स्मृति कार्य नहीं कर सकता।

क्षति स्त्री. (तत्.) 1. हानि, हास, घाटा 2. क्षय, नाश 3. चोट, घाव।

क्षतिग्रस्त वि. (तत्.) जिसकी हानि हुई हो, क्षति उठाने वाला।

क्षतिपूर्ति स्त्री. (तत्.) क्षति पूरी होने का भाव या क्रिया, मुआवजा, घाटे का पूरा हो जाने का भाव या क्रिया।

क्षतोदर पुं. (तत्.) एक प्रकार का उदर रोग, जिसमें अन्न के साथ रेत, तिनका, लकड़ी, हड्डी या काँटा आदि पेट में उतर जाने से या कम भोजन करने से आँतें छिद जाती हैं या कट जाती हैं।

क्षत्ता पुं. (तत्.) 1. द्वारपाल, दरबान 2. मछली 3. दासीपुत्र 4. सारथी 5. ब्रह्मा 6. रथी 7. कोषाध्यक्ष 8. नियोग करने वाला पुरुष 9. वह वर्ण संकर जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय माता और शूद्र पिता से हो 10. काटने वाला।

क्षत्र पुं. (तत्.) 1. बल 2. राष्ट्र 3. धन 4. शरीर 5. जल 6. क्षत्रिय 7. योद्धा 8. क्षत्रिय 9. अधिकार, प्रभुता।

क्षत्रकर्म पुं. (तत्.) क्षत्रियोचित कर्म, वह कर्म जिसका करना क्षत्रियों के लिए आवश्यक हो, जैसे- युद्ध करना, दान देना।

क्षत्रधर्म पुं. (तत्.) क्षत्रियों का धर्म, क्षत्रिय के कर्तव्य, शौर्य।

क्षत्रधर्मा वि. (तत्.) क्षात्र धर्म का पालन करने वाला, वीर योद्धा।

क्षत्रधृति पुं. (तत्.) एक प्रकार का यज्ञ, जो सावन की पूर्णिमा को किया जाता है, राजसूय यज्ञ का एक भाग।

क्षत्रप पुं. (तत्.) 1. क्षत्रपति, राजा 2. शक अथवा पारस के प्राचीन साम्राज्य में मांडलिक राजाओं की उपाधि या पद, प्रांताधिपति, राज्यपाल, राजा की ओर से किसी देश या प्रांत का शासन करनेवाला प्रधान अधिकारी।

क्षत्रपति पुं. (तत्.) 1. राजा, किसी राज्य का स्वामी 2. शिवाजी की उपाधि।

क्षत्रबंधु पुं. (तत्.) नाम मात्र का क्षत्रिय, कर्तव्य रहित क्षत्रिय, ऐसा व्यक्ति जो जन्म से तो क्षत्रिय हो, परंतु क्षत्रियों जैसे कर्म न करता हो।

क्षत्रबद्ध पुं. (तत्.) तेरहवें मनु के पुत्र का नाम।

क्षत्रयोग पुं. (तत्.) ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो मनुष्य को प्रायः राजा या उसके समान बनाता है।

क्षत्रविद्या स्त्री. (तत्.) क्षत्रियों की विद्या/धनुर्विद्या, युद्धविद्या, युद्धकला।

क्षत्रवृक्ष पुं. (तत्.) मुचकुंद नामक वृक्ष।

क्षत्रवेद पुं. (तत्.) धनुर्वेद।

क्षत्रसव पुं. (तत्.) एक यज्ञ जिसे केवल क्षत्रिय ही कर सकता है जैसे- अश्वमेध यज्ञ।